हलाल कमाई

मुहम्मद अज़हर मदनी

''अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया कि ऐ लोगो! अल्लाह तआला पवित्र है और केवल पवित्र व हलाल चीज़ों को ही कुबूल करता है और अल्लाह ने मोमिनों को वही हुक्म दिया है जो नबियों और रसूलों को दिया है''

इस हदीस में मुसलमानों को पवित्र और हालाल चीज़ों के खाने और कमाने का उपदेश दिया गया है, हलाल रोज़ी कमाने से दूसरों का हक नहीं मारा जाता, क्यों कि जो शख्स हलाल कमाई पर ध्यान दे गा वह सिद्धांतों के पालन का पाबन्द हो गा, और इसके विपरीत जो हराम तरीके से कमाता है इससे दूसरों का हक़ छिन जाता है और ऐसे लोगों के माल से बरकत खतम हो जाती है।

आज के भाग दौड़ वाले जीवन में हराम हलाल का अन्तर खतम होता जा रहा है, लोग ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने के धुन में हराम व हलाल के बीच में अन्तर करना छोड़ देते हैं, यही वजह है कि जो लोग इस तरीक़े से पैसा कमाते हैं उनके माल में न तो बरकत होती है और न ही जीवन में सुकून रहता है, हमेशा किसी न किसी चीज़ की कमी का एहसास होता है, यह सब हलाल व हराम में अन्तर न करने का परिणाम और शरीअत की शिक्षाओं से गफलत का अंजाम है। पवित्र कुरआन में हुक्म दिया गया है कि ''ऐ रसूल! हलाल चीज़ें ही खाया करो और जो नेक कर्म तुम कर रहे हो, अल्लाह उसको भली भांति जानता है'' (सूरे मोमिनः५१)

कुरआन में एक दूसरी जगह आदेश दिया गया है कि ''ऐ ईमान वालो! जो पवित्र चीज़ें हम ने तुम्हें दे रखी हैं उन्हें खाओ पियो'' (सूरे बक़रा-१७२)

पवित्र चीज़े खाने का मतलब यह है कि हर इन्सान हलाल कमाई पर ध्यान दे जब उसकी कमाई हलाल होगी तो उसका खान-पान और पहनावा ओढ़ावा भी हलाल हो गा और जब कमाई हराम तरीक़े से होगी तो उसका खान-पान पहनावा ओढ़ावा भी हराम की श्रेणी में आ जायेगा।

जो लोग हराम माल खाते हैं उनकी दुआएं भी कुबूल नहीं होती हैं। अल्लाह के रसूल स० ने फरमायाः ''उसका खाना, पीना, और पहनावा ओढ़ावा हराम कमाई से है और पालन पोषण भी हराम माल से हो रहा हो तो फिर ऐसी सूरत में उसकी (बन्दे) की दुआ कैसे कुबूल होगी।

हराम व हलाल में तमीज़ न करना हमारी लापरवाही और जल्द से जल्द मालदार हो जाने का परिणाम है जिस पर सख्त सजा की चेतावनी दी गई है, इसलिये जरूरी है कि हमारी कमाई हलाल तरीके से हो, और हलाल संसाधनों से हो, और जो भी कमायें हलाल तरीक़े से कमायें और हराम कमाई से हर हाल में बचने की कोशिश करें। यह अल्लाह का कितना बड़ा प्रकोप है कि हराम खाने की वजह से बन्दे की दुआ कुबूल नहीं होती है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें हलाल कमाने और हराम तरीक़े से कमाने से बचने की क्षमता दे।

मासिक

इसलाहे समाज

अगस्त 2023 वर्ष 34 अंक 8

सफरूल मुजफ्फर 1445 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	हलाल कमाई	2
2.	पवित्र कुरआन की विशेषताएं	4
3.	सुगम जीवन के सुनेहरे सिद्धांत	7
4.	इबादत करने में कोताही न करें	8
5.	ग़ीबत, गुस्सा और घमंड	9
6.	मुहताजों का पालन पोषण	12
7.	इस्लाम की शिक्षायें और सिद्धांत	13
8.	प्रशिक्षण की महत्ता	16
9.	यौन अपराध पर काबू पाने का उपाय	18
10.	प्रेज रिलीज़	20
11.	वक़्त बहुमूल्य है	22
12.	ज्ञान प्राप्त करने के आठ महत्वपूर्ण सिद्धांत	24
13.	अपील	27
14.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

पवित्र कुरआन की विशेषताएं

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

पवित्र कुरआन एक संपूर्ण जीवन-विधान है। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जिन विशेषताओं और फज़ीलतों से सम्मानित और सुसज़्ज़ित किया है उनमें से एक अनमोल और बहुमूल्य फज़ीलत और विशेषता यह है कि इस उम्मत को पवित्र कुरआन जैसी बर्कत वाली किताब दी इसके हर हर शब्द और हर हर आयत को चमत्कार क़रार दिया जिस वक़्त इस पवित्र कलाम (वाणी) का अवतरण शुरू हुआ। अरब वासियों ने इस कलाम को चैलेंज करना चाहा और चन्द सरफिरों ने इस मुहिम को व्यवहारिक रूप देने के लिये प्रयास भी किये लेकिन उन्हें मुंह की खानी पड़ी, कुरआन के जैसा तो दूर की बात अरबी भाषी होने के बावजूद इसके बहुत से विषय और अर्थ को समझने से विवश रहे। इसकी वाग्मिता और सरलता की यह स्थिति थी कि अरब वासी जो अपने सिवा पूरी मानवता को गूंगा बताते थे, उन्होंने हज़ार रूकावटों के बावजूद जब इस वाणी को सुना तो उनकी बोलती बन्द हो गई वह इतना परेशान और आश्चर्यचकित हुए कि इस वाणी के बारे में खुल्लम खुल्ला यह कहा कि यह किसी इन्सान की वाणी नहीं हो सकती, इसकी चाश्नी उनके दिलों में घर कर गई यही वजह है कि वह लोग रात के अंधेरों में, दीवारों की आड़ में लोगों की नज़रों से छिप कर और अन्य संसाधनों से इस ईश्वरीय वाणी की तिलावत सुनने लगे। अगर आप सीरत और इतिहास की किताबों का अध्ययन करें तो आप को मालूम होगा कि जिस वक़्त पूरा अरब अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खून का प्यासा था, कुरैश के प्रमुखों की एक बड़ी तादाद रात के अंधेरों में ख़ान-ए-काबा की दीवार की आड़ से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तिलावत सुनने के लिये जमा हो जाती, यह क्या चीज़ थी! अरब वासी अपने तमामतर विरोधों के बाद भी इस वाणी को सुनने के लिये इतनी एकाग्रता से क्यों सुनते रहते, क्या इससे कोई भौतिक लाभ हासिल होता था? नहीं हर्गिज़ नहीं! बात सिर्फ और सिर्फ इतनी सी थी कि पवित्र कुरआन की वाग्मिता एवं सरलता उन्हें अपना मुग्ध बनाये हुई थी। इसका चमत्कार, संक्षेप उनको आश्चर्यचकित और विवश कर देता था, इसकी पवित्रता, मनमोहकता, सार्थकता और उपयोगिता उसे कुबूल करने पर मजबूर कर देती थी क्योंकि एक वाणी की बेहतरी, वर्चस्व, सच्चाई व अच्छाई के लिये जो भी सिद्धांत व नियम हो सकते हैं वह तमाम चीज़ें इस वाणी में संपूर्ण रूप से मौजूद हैं। रहा इसकी उपयोगिता का मामला तो वह एक ऐसा चमत्कार है जो वक़्त गुज़रने के साथ और अधिक उजागर एवं प्रकट होता रहेगा।

यह उन लोगों की बात थी जिनको अल्लाह तआला ने ''प्रथम अज्ञानता'' क़रार दिया जिन्हें इस ध

ारती का सबसे बड़ा गुमराह बताया जिनकी नैतिक स्थिति इतनी गिरी हुई थी कि असंख्य बुराइयां उनके अन्दर न केवल मौजूद थीं बल्कि वह इन बुराइयों को गर्व से बयान भी किया करते थे लेकिन आज जबकि हम मुसलमान हैं, इस पवित्र कुरआन के साथ हमारा बर्ताव कैसा है क्या हम इस पवित्र कुरआन का हक़ अदा करते हैं? क्या रात के अंधेरों में अकेले बैठ कर कुरआन की आयतों में गौर करते हैं? क्या हम अपने घरों को पवित्र कुरआन की तिलावत से आबाद रखते हैं? क्या हमारे महल्ले, गली और आबादी से सुबह के वक़्त इस बरकत वाले कलाम की तिलावत की आवाज़ आती है? या फिर हम इस पवित्र कलाम का हक अदा नहीं करते? निसन्देह हम इन सवालात पर ग़ौर करें और एक उचट्ती नज़र अपनी गली मोहल्ले और आबादी पर डालें तो हमें मालूम होगा कि पवित्र कुरआन के साथ मुसलमानों का बर्ताव बहुत अकहनीय है। एक मुसलमान अपने बच्चों को पवित्र कुरआन की शिक्षा देने के बजाए दीन से दूर कर देने वाली संस्थाओं और मिश्नरी स्कूलों में भेजता है। मुस्लिम गली मोहल्ले का हाल यह है कि जिन घरों से सुबह सवेरे पवित्र कुरआन की तिलावत की आवाज़ आनी चाहिए थी और कल तक आती भी थी और सुबह सवेरे बच्चे गांव व मोहल्ले के मक्तब में जाते थे और पवित्र कुरआन, कलिमा और दुआ की आवाज व बरकात आती थी। अब इन घरों में या तो लोग गफलत के शिकार रहते हैं या मंहगे मिश्नरी और गैर इस्लामी नर्सरियों में जाते हैं जहाँ उन्हें दीन व ईमान और इस्लाम के अलावा बल्कि खिलाफ सब कुछ मिलता है। अफसोस कि इन घरों से फिल्म के गाने, इश्किया गज़लें, तथाकथित दीनी कौवालियों की आवाज़ आती है जो अत्यंत दुखदायक हैं। फिर भी हमें शिकायत है दूसरे लोग हम पर, हमारे पवित्र स्थलों पर, हमारे दीन व ईमान पर हमलावर हैं और हमें दीन से अलग करने पर मजबूर करते हैं जबकि कुरआन से मुसलमानों की बढ़ती गफलत अक्षम्य है क्योंकि कुरआन से ही मुसलमानों की पहचान है इस्लाम और पवित्र कुरआन के विरोधी अज्ञानता में इस के खिलफ प्रोपैगण्डा करते नहीं थकते हैं मगर मुसलमान स्वयं इससे गफलत करते हुए दूर होते जा रहे हैं और इस से दूर होने के तरीके और ज़्यादा कष्टदायी हैं। अगर इस सिलसिले में मुसलमान अपने पूर्वजों की तरह अपना कर्तव्य अदा करते और कुरआन के अधिकार अदा करते तो वह न तो विश्व समुदायों के सामने अपमानित होते और न स्वयं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़्यामत के दिन अपना मुद्दई बनाती। सुनिये और गिरीबान में झांक कर देखिये और रसूल कहेगा कि ''ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक मेरी उम्मत ने इस कुरआन को छोड़ रखा था। '' (सूरे फुरक़ानः३०)

वह मुअ़ज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमां होकर

और हम खुवार हुए तारिके कुरआन होकर

उम्मत अगर कम से कम कुरआन के पांच अधिकारों को याद रखती तो उसकी यह हालत न होती जिस हालत में वह पहुंच चुकी है। पवित्र कुरआन से मजबूत रिश्ता जोड़ने से दुनिया और आखिरत के फितना व फसाद और गम व अज़ाब

से छुटकारा हासिल होगा। इसमें अल्लाह तआला और बन्दों के हक़ चहचानने और अदा करने का हुक्म है, रहमत व मुहब्बत की शिक्षा एवं उपदेश है। बुराई व फसाद और क़त्ल व लूटमार से मना किया गया है। भाईचारा और अम्न व शान्ति पर सब से ज़्यादा जोर दिया गया है और दंगा व फसाद और अशान्ति से रोका गया है और पवित्र कुरआन में एक इन्सान की हत्या को पूरी इन्सानियत की हत्या बताया गया है और एक इन्सान की जान बचाने को पूरी दुनिया की जान बचानो के समान क़रार दिया गया है।

१. कुरआन पर ईमान लायें जैसा कि उसका हक़ है और अल्लाह के फरमान को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू करें।

२. सुबह शाम और हर मकाम पर इसकी तिलावत इस की शान और सुगम आवाज़ के साथ करें।

३. इसके अनुवाद, अर्थ को समझने की पूरी कोशिश करें।

४. इसमें गौर व फिक्र करें और इसके प्रचार व प्रसार, शिक्षा, पठन पाठन का आयोजन करें।

५. इसका व्यवहारिक रूप से पाबन्द बनें और दूसरों को भी इसके सीधे रास्ते पर चलने का उपदेश दें तो दुनिया व आख़िरत की कामयाबी हासिल होगी।

❑❑❑

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

सुगम जीवन के सुनेहरे सिद्धांत

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

सम्माननीय पाठको! मुसलमान होने के नाते यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने घरों को मिसाली बनायें, ऐसा घर बनायें जिस में ईमान का वातावरण हो, और जिस में तक़वा व परहेज़गारी के फूल खिलें घर का वासी तक़वा से सुसज्जित हो ताकी वह आख़िरत के अज़ाब से सुरक्षित रह सकें और जहन्नम की आग में जलने से बच जायें। कुरआन ने हमें यही सन्देश दिया है।

नेक बीवी या जीवन साथी दुनिया की बहुत बड़ी नेमत और दुनिया की सबसे बड़ी दौलत है। अल्लाह के रसूल स० ने फरमायाः पूरी दुनिया जीवन का सामान है और दुनिया की बेहतरीन चीज व सामान नेक औरत है। (सहीह मुस्लिम १४६७)

पति-पत्नी का रिश्ता बहुत खूबसूरत रिश्ता है जो एक दूसरे के बिना असंभव है यह एक ऐसी नेमत है जो इन्सान की प्राकृतिक ज़रूरत है। बीवी का यह हक़ है कि पति उसका धार्मिक प्रशिक्षण करें, उसे नमाज़ी बनायें, उसकी इज्ज़त की हिफाज़त करें, उसे गुनाहों में लिप्त होने से बचायें, दीन पर अमल का शौक़ दिलायें और उसके अन्दर इस्लामी चेतना को जागरूक करें। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है। ''और आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए और स्वयं भी इसकी पाबन्दी कीजिये''। (सूरे ताहा-१३२)

इसलिये मुसलमानों को चाहिए कि वह स्वयं के सुधार के साथ अपने बाल बच्चों पर भी ध्यान दें। अपने साथ अपने घर वालों को भी दीन की राह पर चलायें। समझा बुझा कर प्यार से जिस तरह संभव हो उन्हें सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करें वर्ना अल्लाह के यहां जवाब देना पड़ेगा जैसा कि अल्लाह के रसूल ने फरमायाः

''तुम में से हर शख्स संरक्षक है और इससे उसके मातहतों के बारे में पूछ ताछ होगी।'' (बुखारी)

अर्थात उसने अपने बाल बच्चों की इस्लाह क्यों नहीं की थी।

इसका सबसे बेहतर और उचित तरीका यह है कि पति पहले स्वयं फर्ज़ नमाज़ का, तहज्जुद की नमाज़ का पाबन्द बने फिर बीवी बच्चों को भी इसका पाबन्द बनाये इसलिये यह नमाज़ फितनों से सुरक्षित रहने का बेहतरीन नुस्खा है।

जब दोनों तहज्जुद की नमाज़ का पाबन्द बनेंगे और इस इबादत की अदायगी में एक दूसरे का सहयोग करेंगे तो नबी स० ने ऐसे पति पत्नी के लिये दुआ की है जो अल्लाह के यहां कुबूल हो जाएगी। इसलिये ज़रूरी है कि शौहर अपने दामपत्य जीवन को खूबसूरत बनायें, बीवी का सम्मान करें, उसके मश्वरे पर गौर करें, उससे शिष्टाचार बातें करें इस तरह घर का माहौल सुगम होगा और आबाद भी होगा। इस्लाम ने मानवता को जो अधिकार दिये हैं, उनकी जानकारी मर्द को भी होनी चाहिए और औरतों को भी, दोनों अपने अधिकार प्राप्त करें, अपने अपने कर्तव्यों का अपने कार्यक्षेत्र में रहते हुए अदा करें। इस्लाम यह बल देकर कहता है कि पति-पत्नी एक दूसरे के शुभचिंतक हों, दोनों एक दूसरे का ख्याल रखें और वफादारी का हक़ अदा करें।

इबादत करने में कोताही न करें

नौशाद अहमद

मुसलमानों की आस्था का आधार ऐकेश्वरवाद (तौहीद) पर है, और यह सबसे बड़ी पूँजी व ताक़त है शर्त यह है कि हम अपने आमाल को शरीअत के आदेशों के अनुसार करें क्योंकि यही हमारे लिये मुक्ति व सफलता का सबसे बड़ा साधन है, और जब अल्लाह के आदेशों का पालन इन्सान के व्यवहारिक जीवन की आवाज़ बन जाए तो फिर ऐसा इन्सान, इंसान ही के हित और उसके अधिकार की बात करता है, इन्सान, की कामयाबी की बात करता है और इस्लाम अपने अनुयाइयों से यही मांग करता है कि उसका हर अम्ल और इबादत उसके बताए गये आदेशों के अनुसार हो जाए। धर्म से दूर होने से जीवन की उमंग खतम हो जाती है और जब उमंग ख़तम हो जाती है तो इन्सान की जिंदगी एक अजीब व गरीब असमंजस में लिप्त हो जाती है।

हालात और जीवन में उलट फेर होता रहता है, अल्लाह की रहमत से निराश न हों, गम व दुख के बाद एक नया काल शुरू होता है जिस का उल्लेख कुरआन में भी है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''पस यक़ीनन मुश्किल के साथ आसानी है, बेशक मुश्किल के साथ आसानी है'' (सूरे इंशिराह-५-६)

छोटा हो या बड़ा अमीर हो या गरीब यह ध्यान रहे कि इस दुनिया में जो भी आया है उसको एक न एक दिन इस दुनिया से जाना है इस लिये इन्सान को अपने आमाल की चिंता करनी चाहिये जिन के बारे में क्यामत के दिन कड़े सवाल व जवाब होंगे। दुनिया में तो अच्छे काम करने की मोहलत मिल जाती है, सुधरने का मौक़ा मिल जाता है लेकिन क़्यामत के दिन न सोचने का मौक़ा दिया जाएगा और न दोबारा अमल का मौक़ा दिया जाएगा क्योंकि वह फैसले की आखिरी घड़ी होगी, इसलिये दुनिया में अपने विचार और कर्म को बेहतर बनाने की चिन्ता करें तिलावत, दुआ और अन्य इबादत करने में कोई कोताही न करें। हालात से मायूस न हों, हौसले और मनोबल को टूटने न दें, अल्लाह ने जो नियत (मुकददर) कर दिया है वह होकर रहेगा लेकिन कोशिश करना अपना काम है एक मोमिन की यह आस्था होनी चाहिये कि अल्लाह बुरे कर्म की सजा देता है और अच्छे कर्म पर पुण्य देता है, जब बुरा इन्सान किसी कठिनाई में पड़ता है तो कहा जाता है कि वह अपने बुरे कर्मों की सज़ा भुगत रहा है और जब नेक होकर किसी अग्नि परीक्षा में पड़ जाता है तो कहा जाता है कि अल्लाह की तरफ से उसकी आज़माइश हो रही है। इसी लिये हमें सत्य मार्ग को अपनाने का हुक्म दिया गया है। पवित्र कुरआन ने नमाज़ और सब्र के द्वारा अल्लाह से मदद मांगने की शिक्षा दी है, इस लिये धैर्य व संयम अपनाने और नमाज़ पढ़ने में कोताही नहीं करनी चाहिए, संसार में अनेक अप्रिय घटनाएं घटित होती रहती हैं, ज़रूरी नहीं है कि हर मामले में प्रतिक्रिया व्यक्त की जाए।

❑❑❑

ग़ीबत, गुस्सा और घमंड

डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

ग़ीबत का अर्थ किसी की पीठ पीछे निन्दा करना है। यह एक सामाजिक बिगाड़ और रोग है, जिसकी इस्लाम में कठोर शब्दों में निन्दा की गई है। कुरआन में है।

''ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचा करो, क्योंकि कतिपय गुमान पाप होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का मांस खाए? इससे तुम्हें घृणा होगी और अल्लाह से डरते रहो। निश्चय ही अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला और अत्यन्त दयावान है'' (सूरा-४९, अल-हुजुरात, आयत-१२)

अब ग़ीबत करने वाला स्वयं निणर्य कर ले कि कया वह लोगों की पीठ पीछे निन्दा करके अपने मुर्दा भाई का मांस खाना पसन्द करेगा? यहां पीठ पीछे निन्दा करने की उपमा मरे हुए भाई का मांस खाने से इसलिए दी गई कि जिस प्रकार मृत भाई अपने बचाव में कुछ नहीं कर सकता उसी प्रकार, जिसकी ग़ीबत की जा रही है वह कुछ नहीं कर सकता।

यह तो उस अवस्था में है जब वह बुराई, जो पीठ पीछे की जा रही है, उसमें पाई जा रही हो और अगर उसकी निन्दा किसी ऐसी बुराई के बारे में की जाए जो उसमें पाई ही न जाती हो, तो यह तोहमत (मिथ्यारोपण) कहलाता है, जो गीबत से भी अधिक बड़ा पाप है।

कुरआन जहां मनुष्यों को गीबत जैसी सामाजिक बुराई से रोकता है, वहीं उन्हें पारस्परिक प्रेम-भावना की शिक्षा भी देता है-

पुण्य कर्मों और तक़वा (ईश-परायणता) में एक-दूसरे की सहायता करते रहो, पाप तथा अत्याचार में सहायता न करो, अल्लाह से डरते रहो। निश्चय ही अल्लाह कठिन यातना देने वाला है। (सूरा-५, अल माइदा,आयत-२)

गुस्सा

कुरआन में इसके लिए 'ग़ज़ब' शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ कोप, प्रकोप, क्रोध, फटकार इत्यादि होता है। इसमें अल्लाह का 'गज़ब' भी शामिल है और मनुष्यों का भी। अल्लाह का 'गज़ब' मनुष्यों के सुधार के लिए प्रयुक्त हुआ है। (देखिएः सूरा-४८, अत-फ़तह, आयत-६०, सूरा-६, अल मुम्तहिना, आयत-१३, सूरा-२४, अन-नूर, आयत-६)

परन्तु मनुष्यों में 'गज़ब' का होना शिष्टाचार के विरूद्ध है।

इसलिए ऐसे मनुष्य की प्रशंसा की गई है, जो गुस्सा पी जाता हो। (कुरआन, सूरा-३, आले-इमरान, आयत-१३४)

सहीह हदीसों में बलवान उस व्यक्ति को कहा गया है जो गुस्से की दशा में अपने आप को संभाले तथा अपने ऊपर पूरा नियंत्रण रखे। (देखिएः बुखारी, ६११४ तथा मुस्लिम, २६०९)

इसी प्रकार एक सहीह हदीस में आया है कि एक व्यक्ति ने नबी स० से निवेदन किया कि मुझे कोई उपदेश दें। आप स० ने कहा, ''गुस्सा मत किया करो'' उस व्यक्ति ने

दोबारा निवेदन किया। आप स० ने उसे वही उपदेश दिया। इस प्रकार उसने कई बार निवेदन किया और आप उसको यही कहते रहे कि गुस्सा मत किया करो। (देखिएः सहीह बुखारी,६११६)

घमंड

'घमंड' अरबी शब्द 'तकब्बुर' का हिन्दी अनुवाद है। घमंड एक ऐसा रोग है कि यदि किसी मनुष्य को लग जाए तो वह सत्य और असत्य में अन्तर नहीं कर सकता। इसी लिए अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो घमंडी हो। कुरआन में है।

''अल्लाह को ऐसे लोग प्रिय नहीं हैं जो अपने आपको बड़ा समझते हों।'' (अर्थात घमंडी हों) सूरा १६, अन-नहल, आयत-२३

इसके विरुद्ध उन लोगों की प्रशंसा की गई है जो घमंडी नहीं हैं। कुरआन में एक स्थान पर आया है-

''तुम ईमान वालों की शत्रुता में सब लोगों से बढ़कर -यहूदियों' और अनेकेश्वर वादियों को पाओगे, और ईमान वालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे जिन्होंने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं। यह इस कारण कि उनमें बहुत से धर्मज्ञाता और संसार त्यागी सन्त पाए जाते हैं, और इस कारण कि वे घमंड नहीं करते।'' (सूरा-५, अल-माइदा, आयत-८२)

अर्थात जब इनको सत्य बात बताई जाती है, तो स्वीकार कर लेते हैं।

परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि यहूदियों में कोई सत्य स्वीकार करने वाला नहीं था। उनमें बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया। यहूदियों के एक विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम थे, जिनकी प्रशंसा करते हुए पवित्र कुरआन में कहा गया है।

''बनी इसराईल में से एक गवाह ने ऐसी ही 'किताब' की गवाही भी दे दी। और वह ईमान भी ले आया और तुम घमंड में पड़े रह गए।'' सूरा-४६, अल अहकाफ, आयत-१०

एक सहीह हदीस में आया है कि साद-बिन अबी वक़्क़ास कहते हैं।

''मैंने धरती पर चलनेवाले किसी व्यक्ति के विषय में यह नहीं सुना कि नबी स० उसको जन्नती कहते हों सिवाय अब्दुल्लाह बिन सलाम के''।

इन्ही के विषय में कुरआन की सूरा-४३, अल-अहक़ाफ़ की यह आयत उतरी। (देखिएः बुखारी, ३८१२ तथा मुस्लिम, २४८३)

अल्लाह ने घमंडियों की घोर निन्दा की है।

सबसे पहला घमंडी तो 'इबलीस' था, जिसको अल्लाह ने फरिश्तों के साथ आदम के आगे झुकने का आदेश दिया, उसके अतिरिक्त सब झुक गए। उसने झुकने से इनकार कर दिया और घमंड किया और वह अवज्ञाकारियों में हो गया। (कुरआन, सूरा-२, अल बकरा, आयत-३४)

और इसी घमंड के कारण उसको अपमानित करके स्वर्ग से ध रती पर भेज दिया गया। (कुरआन, सूरा-७, अल-आराफ, आयत-१३)

अर्थात घमंड करने वाले जहां भी होंगे अपमानित ही होंगे। उच्च श्रेणी के अधिकारी तो वे लोग होंगे जो अल्लाह के लिए विनम्रता ग्रहण करेंगे, जिसकी पुष्टि सहीह हदीस से भी होती है।

''जो अल्लाह के लिए विनम्रता ग्रहण करेगा अल्लाह उसको ऊंचा दरजा प्रदान करेगा'' (सहीह मुस्लिम, २५८८)

एक दूसरी सहीह हदीस में इस प्रकार आया है।

''मेरी ओर यह वह्य की गई कि लोगो! विनम्रता ग्रहण करो, एक-दूसरे पर घमंड न करो और न ही किसी पर अत्याचार करो।'' (सहीह मुस्लिम, २८६५)

कुरआन में बहुत से अहंकारियों का वर्णन हुआ है, उनमें से एक फिरऔन भी है।

''उसने और उसकी सेनाओं ने धरती में किसी हक़ के बिना घमंड किया और समझा कि उन्हें हमारी ओर पलटना न होगा, तो हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ा और उन्हें दरिया में फेंक दिया अब देख लो उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ।'' (सूरा-२८, अल-क़सम, आयतें-३९,४०)

कुरआन में तीन महा अहंकारियों का वर्णन एक ही आयत में आया है और फिर उनका अंजाम भी बताया गया है। ''क़ारून, फिरऔन और हामान को हमने विनष्ट किया। मूसा उनके पास प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर आया, परन्तु उन्होंने ध रती में घमंड किया, यद्यपि वे बाज़ी ले जानेवाले न थे। तो हर एक को हमने उसके अपने गुनाह के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर तो हमने पथराव करनेवाली हवा भेजी और उनमें से कुछ को एक प्रचण्ड धमाके ने आ लिया और उनमें से कुछ को हमने धरती में ध ंसा दिया और उनमें से कुछ को डुबो दिया। अल्लाह ऐसा न था कि उनपर जुल्म करता, परन्तु वे स्वयं अपने-आप पर जुल्म करते थे।''(सूरा-२९, अल-अनकबूत, आयतें ३९,४०)

इसी प्रकार जब नबी मुहम्मद स० ने अल्लाह की ओर लोगों को बुलाया तो कुरैश के सरदारों में से एक वलीद-बिन-मुगीरा भी था, जिसने घमंड किया। उस पर कुरआन की यह आयत अवतरित हुई।

''छोड़ दो मुझे और उसको जिसे मैंने अकेला पैदा किया।'' सूरा-७४, अल मुददस्सिर, आयत-११

और फिर कुरआन में अल्लाह अपनी नेमतों को गिनाने के बाद कहता है। ''फिर पीठ फेरी और घमंड किया। फिर कहा यह कुरआन तो एक जादू है, जो होता चला आ रहा है। यह तो मनुष्य ही की वाणी है। मैं जल्द ही उसे सक़र (दहकती आग) में डाल दूंगा और तुम्हें क्या मालूम यह सक़र क्या है? यह वह आग है जो न तरस खाएगी और न छोड़ेगी। यह खाल को झुलसाकर काला कर देगी।'' सूरा-७४, अल मुद्दस्सिर आयतें-२३-२९)

यह वलीद-बिन मुग़ीरा कुरैश के उन सरदारों में से एक था जो नबी का मज़ाक उड़ाया करता था, जिस पर यह आयत उतरी।

''हंसी उड़ाने वालों के लिए हम तुम्हारी ओर से काफी हैं।'' सूरा-१५, अल हिज्र, आयत-९५

फिर उसका देहान्त इस प्रकार हुआ कि एक तीर जो उसके पैर में दो वर्ष पूर्व लग गया था, उससे विष पैदा हो गया और फिर वह इस संसार से ऐसा गया कि उसको याद करने वाला भी कोई नहीं रहा, बल्कि उसके कुछ पुत्रों का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है जबकि उनके घमंडी पिता पर धिक्कार किया जाता है।

(सभारः ''कुरआन मजीद की इन्साक्लो पीडिया'')

मुहताजों का पालन पोषण

डा० रफ़ीउल्लाह मस्ऊद तैमी

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से एक आदमी ने पूछा कि इस्लाम की कौन सी बात सबसे बेहतर है। आप स०अ०व० ने फरमायाः भूखे आदमी को खाना खिलाना, और हर जाने अन्जाने शख्स को सलाम करना। (बुखारी)

इस्लाम खूबियों का संग्रह है इनसे वही शख्स फायदा उठाता है जो इस्लाम को दिल व जान से प्रिय रखता है और इस्लाम के बताये गये आदर्शों के अनुसार जीवन गुजारता है जब कोई उससे नफरत करेगा, उसके खिलाफ प्रोपैगण्डा करेगा और उस पर दोषारोपण करेगा तो ऐसे लोगों की निगाह में इस्लाम की खूबियां अर्थहीन हो जाती हैं और ऐसे लोग इस्लाम की खूबियों से फायदा नहीं उठा पाते हैं। यह हकीकत भी है कि जब दिल में किसी चीज से घृणा और नफरत होगी तो उसकी खूबियां बुराईयों में बदल जाती हैं और हर भली बात बुरी लगती है इस्लाम की खूबियों का खजाना वही पा सकता है जो उसको सच्चे मन से पढ़े।

इस हदीस में इसलाम की खूबी यह बतायी गयी है कि भूखे को सच्चे दिल से खाना खिलाया जाये और यह कर्म अल्लाह को खुश करने और उसका शुक्रिया अदा करने के लिये किया जाये। कुरआन में ऐसे लोगों की खूबी बयान की गयी है। कुरआन में अल्लहा तआला ने फरमाया है।

''और अल्लाह की मुहब्बत में मिस्कीन, यतीम और कैदियों को खाना खिलाते हैं, हम तो तुम्हें केवल अल्लाह की रिजामन्दी के लिये खिलाते हैं न तुमसे बदला चाहते हैं न शुक्रगुज़ारी''। (सूरे-दह्र-८-९)

टीकाकारों ने लिखा है कि माल से मुहब्बत के बावजूद ज़रूरत मन्दों मुहताजों को खाना खिलाते हैं और कैदी गैर मुस्लिम हो तब भी उसके साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद है बदर के कैदियों के बारे में अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने सहाबा किराम को आदेश दिया कि उनकी मेहमान नवाजी करो सहाबा किराम अर्थात आप के प्यारे साथी पहले कैदियों को खिलाने के बाद खाते थे। इब्ने कसीर इसी तरह सेवक के बारे में भी कहा गया है कि उनके साथ सदव्यवहार किया जाये।

हदीस में जाने अनजाने सबसे सलाम करने को इस्लाम की खूबी बतायी गयी है सलाम करना और उसको समाज में फैलाना इस्लाम की एक ऐसी खूबी है जिससे खुशगवार माहौल बनता है प्यार मोहब्बत बढ़ती है नफरत खत्म होती है, दुश्मनी खत्म होती है, सूसाइटी में भाई चारा बढ़ता है।

इस्लाम की शिक्षायें और सिद्धांत

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई अपने इस्लाम को बेहतर बना ले तो हर नेकी जो वह करता है उसके बदले में उसके लिये दस से सौ गुना तक लिख दिया जाता है और हर बुराई जिसको वह करता है तो उसके बराबर लिख दिया जाता है। (बुखारी४२, मुस्लिम१२६)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से किसी के पास शैतान आता है फिर कहता है कि फुलां चीज़ को किस ने पैदा किया? फुलां चीज़ को किसने पैदा किया यहां तक कि शैतान कहता है कि तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब वह किसी को इस तरह के वसवसा में डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये और शैतानी ख्याल को छोड़ दे। (बुखारी३२७६, मुस्लिम१३४)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल से कहता है बेशक अल्लाह फुलां से मुहब्बत करता है इसलिये तू भी उससे मुहब्बत करो फिर जिब्रईल भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर जिब्रईल आसमान वालों को पुकारने लगते हैं कि अल्लाह तआला फुलां शख्स से मुहब्बत करता है इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत करो, पुकार लगाने के बाद पूरे आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं इसके बाद पूरी धरती वाले उसको मक़बूल समझते हैं। (बुखारीः ३२०६, मुस्लिमः २६३७)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसे वजू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुजू कर ले। (बुखारी,६६५४, मुस्लिम २२५)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर थोड़ी सी भी मैल बाकी नहीं रहे गी। यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८, मुस्लिम ६६७, शब्द मुस्लिम के हैं)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया गयाः कौन सा अमल सबसे अफज़ल है? तो आप ने फरमायाः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान। पूछा गयाः फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद (अत्याचार और जुल्म व जियादती के खिलाफ आवाज़ उठाना और उसको रोकना) और असहाय व गरीबों की मदद करना पूछा गया फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमायाः हज्जे मबरूर (बुखारी २६, मुस्लिम ८३)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला

अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अपने मेहमान का सम्मान करना चाहिये और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अच्छी बात कहनी चाहिये या खामोश रहना चाहिये। (बुखारी ६१३६, मुस्लिम ४७)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हमारा रब आसमाने दुनिया पर हर रात को उस वक़्त उतरता है जब रात की आखिरी तिहाई बाकी रहती है कहता है जो मुझे पुकारे गा तो उसकी दुआ कुबूल करूंगा जो मुझसे मांगे गा तो मैं उसको दूंगा जो मुझसे मआफी तलब करेगा तो मैं उसको मआफ कर दूंगा। (बुखारी, ११४५, मुस्लिम ७५८)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने कहाः आदम की औलाद मुझे दुख पहुंचाती है वह जमाने को गाली देती है और जमाना मैं ही हूं मामले मेरे हाथ में है मैं ही रात और दिन को बदलता हूं। (बुखारी ७४६१, मुस्लिम २२४६)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नमाज़ में सफों को बराबर रखो क्यों कि नमाज़ का हुस्न सफों को बराबर रखने में है। (बुखारी ७२२ मुस्लिम ४३५)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुर्ग की बांग (आवाज़) सुनो तो अल्लाह से उसके फज्ल का सवाल करो क्योंकि उसने फरिश्ते को देखा है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है। (बुखारी ३३०३, मुस्लिम २७२६)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मेरे खलील सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हर महीने की तीन तारीखों में रोज़ा रखने की वसिय्यत की थी, और चाश्त की दो रकअत पढ़ने की वसिय्यत की थी और सोने से पहले वित्र पढ़ लेने की भी वसियत की थी। (बुखारी, १६८१ मुस्लिम ७२१)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल किस तरह के सदके में ज़्यादा सवाब है? आपने फरमायाः जिसे तुम सेहत के साथ बुख्ल के बावजूद करो तुम्हें एक तरफ फकीरी का डर हो और दूसरी तरफ मालदार बनने की तमन्ना और उस सदक खैरात में ढील नहीं होनी चाहिये कि जब जान हलक तक आ जाये तो उस वक़्त तू कहने लगे कि फुलां के लिये इतना और फुलां के लिए इतना हालांकि अब तो वह फुलां का हो चुका है। (बुखारी १४१६, मुस्लिम १०३२)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम जनाज़ा को तेज़ी से लेकर चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ नजदीक कर रहे हो और अरग इसके सिवा है तो एक बुराई है जिसे तुम अपनी गर्देनों से उतार रहे हो। (बुखारी १३१५, मुस्लिम ६४४)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला

अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला का हर मुसलमान पर हक़ है कि हर सात दिन में एक दिन नहाये, उस दिन अपने सर को और जिस्म को गुस्ल दे। (बुखारी ८९७ मुस्लिम ८४९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कसम खाने से सामान बिक जाती है लेकिन कसम बरकत को मिटा देती है। (बुखारी २०८७, मुस्लिम १६०६)

अबू हरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जायेगा लेकिन खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वालों को मआफ नहीं किया जायेगा और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल हैं कि एक शख्स रात को कोई (गुनाह) का काम करे और अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा लिया है मगर सुबह होने पर वह कहने लगे कि ऐ फुलां मैंने कल रात फुलां फुलां काम किया था, रात गुज़र गयी थी, उसके रब ने उसके गुनाह को छुपाये रखा और जब सुबह हुयी तो उसने खुद ही अल्लाह के पर्दे को छुपा दिया। (बुखारी ६०६९, मुस्लिम २९९०) अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (बुखारी ३२७७ मुस्लिम १०७९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भूल कर खा पी ले तो उसे चाहिये कि अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (बुखारी १९३३, मुस्लिम ११५५)

२४. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इस घर (काबा) का हज्ज किया और उसमें न शहवत की बात की और न कोई गुनाह का काम किया तो वह उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उस की मां ने उसे जना किया था। (बुखारी १८१९, मुस्लिम १३५०)

२५. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चार चीजों की बुनियाद पर औरत से शादी की जाती है उसके माल की वजह से उसके हसब नसब की वजह से और उसके दीन की वजह से और तुम दीनदार औरत से शादी करके कामयाबी हासिल करो, नहीं तो तुम्हारे हाथों में मिटटी लगेगी। (बुखारी ५०९० मुस्लिम १४६६) २६. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे घर और मेरे मिंबर के बीच की जमीन जन्नत के बागों में से एक बाग है और मेरा मिंबर मेरे हौज़ के ऊपर होगा। (बुखारी ११९६, मुस्लिम १३९१)

२७. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले से सलाम करेगा, पैदल चलने वाला बैठने वाले से और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों से सलाम करेंगे। (बुखारी २१६० मुस्लिम ६२३२)

प्रशिक्षण की महत्ता

डा० मुक़तदा हसन अज़हरी रह०

इस्लाम की दृष्टि में प्रशिक्षण की समस्या अति महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण से ही मनुष्य प्रगति के चरम शिखर पर पहुंचता है। आगामी जीवन में शरीअत की पाबन्दी तथा उचित मार्ग पर सन्तुलित रहने का आधार प्रशिक्षण पर ही निर्भर है। प्रारम्भिक जीवन में जब पुण्य कार्यों से लगाव तथा बुराइयों से घृणा हो जाती है तो उसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है।

माता-पिता, तथा अभिभावक एवं शिक्षक जिनसे भी शिक्षा-दीक्षा का सम्बन्ध है उनको इस्लाम ने जिम्मेदार बनाया है तथा इस विषय में भरपूर प्रयास करने का सुझाव दिया है। कुरआन में है कि

मोमिनो! स्वयं को तथा अपनी सन्तान एवं परिवार को नरक की आग से बचाओ। (सूरः मरयम आयत-६) निश्चय ही नरक से बचने का उपाय यही है कि माता-पिता अपनी सन्तान को इस्लामी शिक्षाओं पर व्यवहार करने के योग्य बनायें तथा बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा दें।

बुखारी तथा मुस्लिम की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह स० ने कहा कि पुरूष अपनी सन्तान तथा परिवार का जिम्मेदार व्यक्ति है। तथा पत्नी अपने पति के घर की रक्षक है एवं जिम्मेदार है, दोनों से उनके अधीन लोगों के सम्बन्ध में प्रश्न होगा।

यही कारण है कि प्रत्येक युग में मुसलमानों ने सन्तान के प्रशिक्षण पर ध्यान दिया स्वयं भी प्रयास किया तथा शिक्षा-दीक्षा के लिए शिक्षक भी नियुक्त किये।

माता-पिता तथा प्रशिक्षण

सन्तान के प्रशिक्षण में माता-पिता का दायित्व अति महत्वपूर्ण है। बच्चा स्कूल जाने से पूर्व बचपन का एक लम्बा समय माता-पिता तथा निकट सम्बन्धियों के साथ व्यतीत करता है तथा उन्हीं से शिष्टाचार एवं सदव्यवहार सीखता है मां की गोद बच्चे की प्रथम पाठशाला है। जन्म से पांच छः वर्षों तक का समय जो बच्चा माता-पिता के साथ व्यतीत करता है देखने में यह अल्प समय लगता है, परन्तु अनुभव बताता है कि यही समय सबसे अधिक मूल्यवान है। इस काल में उसे जो शिक्षा-दीक्षा दी गई है उसका असाधारण प्रभाव होता है। हदीस शरीफ में इसीलिए बच्चों से सम्बन्धित बहुत सी शिक्षायें इसी काल से आरम्भ कर दी गयी हैं।

इस अवस्था के महत्व को देखते हुए इस्लाम ने माता-पिता को सन्तान की शिक्षा-दीक्षा का जिम्मेदार ठहराया है तथा उनका मार्गदर्शित किया है कि वे अपनी शिक्षाओं एवं अपने चरित्र व व्यवहार से बच्चों को उचित मार्ग पर ले चलें तथा शरीअत के आदेशों के अनुसार उनके चरित्र का निर्माण करें।

प्रारम्भिक काल में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान न देने से उसके अति कुपरिणाम होते हैं तथा इस दोष से माता-पिता को मुक्त नहीं किया जा सकता। एक व्यक्ति ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास आकर अपने लड़के के अभद्र व्यवहार की शिकायत की।

लड़के ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से पूछा कि अमीरूल मोमिनीन! (मुसलमानों के शासक) बाप पर बेटे का क्या अधिकार है? उन्होंने उत्तर में कहा कि बाप को चाहिए कि बेटे के लिए अच्छी मां का चुनाव करे, अर्थात पवित्र स्त्री से विवाह करे ताकि सन्तान अच्छी पैदा हो, तथा बच्चा पैदा हो तो अच्छा नाम रखे और उसे कुरआन की शिक्षा दे।

यह सुनकर लड़के ने कहा कि मेरे बाप ने इसमें से कोई कार्य नहीं किया है मेरी मां हबशी है तथा एक मजूसी के अधिकार में थी और मेरा नाम खनफसा (कीड़ा) रखा, तथा कुरआन का एक अक्षर भी मुझे नहीं सिखाया।

हज़रत उमर रजि० ने लड़के की बात सुनकर पिता की ओर ध यान दिया और कहा कि तुम अपने लड़के की अव्यवहारिकता की शिकायत लेकर आये हो, परन्तु इससे पूर्व तुम स्वंय इसके साथ अव्यवहारिकता का परिचय दे चुके हो। हज़रत उमर रजि० के इस उत्तर से इस बात का संकेत मिलता है कि अच्छे चरित्र एवं व्यवहार के लिए बच्चों की उचित देख-रेख आवश्यक है।

प्रशिक्षण के विषय में मां की भूमिका अति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, क्योंकि पिता की अपेक्षा मां का सम्बन्ध बच्चे से अधिक होता है। एक अरबी कवि अपनी कविता में मां की स्थिति का चित्रण इस प्रकार करता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने लड़के की बात सुनकर पिता की ओर ध्यान दिया और कहा कि तुम अपने लड़के की अव्यवहारिकता की शिकायत लेकर आये हो, परन्तु इससे पूर्व तुम स्वंय इसके साथ अव्यवहारिकता का परिचय दे चुके हो। हज़रत उमर रजि० के इस उत्तर से इस बात का संकेत मिलता है कि अच्छे चरित्र एवं व्यवहार के लिए बच्चों की उचित देख-रेख आवश्यक है।

अनुवाद- मां एक पाठशाला है, इसे यदि बना लो तो एक अच्छा राष्ट्र तैयार हो जाएगा।

मुस्लिम प्रशिक्षण विशेषज्ञों का विचार है कि बच्चे का पालन-पोषण स्वंय मां को करना चाहिए। उसे किसी दाई या अन्य पेशेवर पालने वालों के हवाले नहीं करना चाहिये, क्योंकि बच्चे को जो प्यार मां से मिलेगा वह अन्य से नहीं। चिकितसकीय तथा वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि शारीरिक तथा चारित्रिक रूप से बच्चा, दूध पिलाने वाली महिला का प्रभाव अधि ाक ग्रहण करता हैं अतः यदि बच्चे को आया या दाई के हवाले करना आवश्यक हो तो ऐसी स्थिति में ध ाार्मिक एवं पवित्र विचारधारा की महिला जो शिक्षा-दीक्षा की जानकार हो उसका चुनाव करना चाहए। प्रशिक्षण के विषय में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि माता-पिता बच्चे के साथ कड़ाई तथा नरमी बरतने में सन्तुलित ढंग से काम लें। प्रत्येक समय या अवसर पर बच्चे से नाराज़ रहना या बात-बात पर डांटना, या झिड़िकना इससे बच्चे में गलत भावनायें उत्पन्न होती हैं तथा बच्चे के साथ अधिक प्यार भी उसे गलत मार्ग पर डाल देता है। इसलिये आवश्यक है कि माता-पिता, विशेषकर मां, बच्चे के साथ कड़ाई ताथा नरमी में सन्तुलित मार्ग अपनाये ताकि बच्चा उचित मार्ग पर कायम रहे।

''इस्लाम और औरत''

यौन अपराध पर काबू पाने का उपाय

एन. अहमद

हम आये दिन समाचार पत्रों में नारी जाति से संबन्धित कुछ नाखुशगवार खबरें पढ़ते रहते हैं। जैसे कि दहेज के नाम पर मार ध ाड़, हत्या, लूटपाट, छेड़खानी, रेप इत्यादि। इस तरह की खबरें किसी भी सभ्य समाज की पहचान नहीं हैं, यह सब एक जिम्मेदार नागरिक के लिये बहुत ही दुखदायी होती हैं, इन सब चीजों की रोकथाम के लिये हुकूमत और कुछ लोग प्रयास भी करते हैं लेकिन रोकथाम के लिये किये जाने वाले उपाय कारगर ना होने के कारण हम बुराइयों पर काबू नहीं पाते, इस लेख में यौन अपराध ा के बढ़ते दायरे के बारे में रोशनी डालना चाहते हैं। इस में कोई शक नहीं है कि यौन अपराध इस वक़्त हमारे समाज को घुन की तरह खा रहा है और अखबारों के अनुसार रोजाना इस का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। यहां यह कहना अनुचित नहीं होगा कि अश्लील पत्रिकाओं और मीडिया में छपने और दिखाये जाने वाले अश्लील विज्ञापनों ने जलते पर घी का काम किया है और अगर जागृत लोग यह चाहते हैं कि यौन अपराध और अश्लीलता का अंत हो जाये तो हमें गंदे नालों को बंद करना होगा। इस्लाम ने इस समस्या के समाधान के लिये अनेकों उपाय बताये हैं अगर उन के अनुसार यौन उपराध के खिलाफ काम किया जाये तो समाज के इस नासूर पर काबू पाया जा सकता है। जैसा कि हम लोग जानते हैं कि इस अपराध ा को करने वाले इंसान ही हैं लेकिन इंसान को एक सीमा में रहने के लिये कुछ कारगर उपाय बताये गये हैं, (१) मनुष्य का आध्यात्मिक आध ार ठोस होना चाहिये, इस सिलसिले में इस्लाम ने चेतावनी दी है कि अगर अवैध तरीके से यौन संबन्ध बनाओगे तो परलोक में कड़ी सजा दी जायेगी। अन्तिम संदेष्ठा मुहम्मद स० ने मानव समाज को सम्बोधित करते हुऐ कहा कि अगर तुम दो चीजों की गारंटी दे दो तो मैं तुम्हें स्वर्ग की गारंटी देता हूं। जुबान और शर्मगाह (गुप्ताँग)। इस उपदेश में पैगम्बर मुहम्मद स० ने इंसानों को बुराई से दूर रहने की शिक्षा दी है और मरने के बाद उसे स्वर्ग में ले जाने का वादा भी किया है।

इसी तरह इस्लाम ने नारी को पर्दा में रहने का आदेश दिया है। औरत को इस्लाम ने ठीक ठंग से कपड़ा पहनने की शिक्षा दी है। पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमाया जो औरत ज्यादा बारीक कपड़ा (जिससे शरीर दिखायी दे) पहने तो स्वर्ग की खुश्बू भी नहीं पाये गी। पैग़म्बर मुहम्मद स० ने फरमाया कि जवान आदमी और औरत तनहाई में न रहें जब वह तनहाई (एकांत) में होते हैं तो उन के बीच एक तीसरा शैतान होता है। कुरआन में कहा गया है कि अपनी निगाहें नीची रखो, पैगम्बर मुहम्मद स० ने फरमाया कि जब लड़का, लड़की बालिग़ हो (व्यस्क) हो जायें तो उन का विवाह करने में देर न करो।

उपर्युक्त में जो उपाय बताये गये हैं अगर इस के अनुसार काम किया जाये तो इन सब बुराइयों पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

इस्लाम का मतलब अम्न व शान्ति: अल्लाह ने दुनिया में जितनी भी चीजों को पैदा किया है सब की अपनी जगह पर अहमियत है, लेकिन उसने सबसे ज्यादा सम्मान इंसान को दी है, क्योंकि इंसान के धड़ में उसने ऐसी खूबिया रख दी हैं जो उसे दूसरी तमाम चीजों से प्रधान (मुमताज) बना देती हें। कुरआन में इंसान की अहमियत को बयान करते हुये अल्लाह कहता है ''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद (उपद्रव) मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमान लोगों को जिंदा कर दिया'' (सूरे-माइदा-३३) दूसरी जगह अल्लाह कुरआन में इंसान की क़द्रो कीमत आदर व सम्मान के बारे में बयान करता है ''और हमने यहूदियों के जिम्मे तौरात में यह बात निध ार्रित कर दी थी कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और विशेष जख्मों का भी बदला है।'' (सूरे माइदा-४५)

इसी तरह जो जमीन में फसाद उपद्रव फैलाते हैं या कोशिश करते हैं तो उन्हें दुनिया और आखिरत में सख्त सज़ा की चेतावनी दी गयी है। कुरआन कहता है ''जो अल्लाह से और उसके रसूल से लड़े और जमीन में फसाद करते फिरें उनकी सजा यही है कि वह क़त्ल कर दिये जायें या सूली पर चढ़ा दिये जायें या मुखालिफ जानिब से उनके हाथ पांव काट दिये जायें या उन्हें देश निवार्सित (जिला वतन) कर दिया जाये तो यह हुआ उनका दुनियावी अपमान और आखिरत में उनके लिये बड़ा भारी अज़ाब है''। (सूर माइदा-३३)

कुरआन में मुसलमानों को विशेष तौर पर यह आदेश दिया गया है कि जो तुम से छेड़ छाड़ न करें और तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करें उनके साथ अच्छा व्यवहार और इंसाफ से काम लो। और जो लोग तुम से दीन के सिलसिले में क़िताल नहीं करते हैं और न ही तुम को तुम्हारे घरों से निकालते हैं, ऐसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार और इंसाफ करने से अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता है बल्कि अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है।'' संदेष्टा मुहम्मद स० ने अपने हज के आखिरी भाषण में स्पष्ट शब्दों में कहा कि सुनो तुम्हारे खून माल और तुम्हारी इज्जत तुम पर ऐसे ही हराम है जैसा कि इस महीने में और इस शहर में इस दिन की हुर्मत (सम्मान) है इसी तरह बुखारी में है यह दीन (इस्लाम) आसान है और जो इस में खींचतान करेगा वह पराजित हो जायेगा। इस्लाम हर हाल में अत्याचार, आतंक से रोकता है इस्लाम कहता है कि अगर कोई समझौता करना चाहे तो समझौता करना ज्यादा बेहतर है। कुरआन कहता है ''अगर वह समझौते (सुलह) की तरफ झुकें तो आप भी सुलह की तरफ झुक जायें।'' (सूरे अनफाल ६१)

❑❑❑

सऊदी अरब के युवराज और वहाँ की महत्वपूर्ण हस्तियों से मर्कज़ी जमीअत के अमीर महोदय की मुलाक़ात एवं आप का स्वागत

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने हज यात्रा के दौरान आदरणीय युवराज शहजादा मुहम्मद बिन सलमान बिन अब्दुल अजीज़ आले सऊद से मिना में स्थिति शाही महल में इस्लाम जगत के विभिन्न धार्मिक संगठनों के पदधारियों के साथ भेंट की और उनसे शिष्टाचारपूर्ण जज़बात का इज़हार किया और हज के सफलता पूर्वक संपन्न होने पर बधाई दी। यह भेंट बड़े सुगम वातावरण में हुई।

मर्कज़ी जमीअत के अमीर महोदय मौलाना असगर इमाम महदी सलफी ने हज के सफर में इस्लामी मामलात के मंत्री डा० अब्दुल लतीफ बिन अब्दुल अज़ीज आले शैख से कई बार भेंट किया और उन्होंने आप का भव्य स्वागत एवं बड़ा आदर सम्मान किया। मंत्री महोदय से विभिन्न महत्वपूर्व मामलों पर विचार विनयम किया। जमीअत व जमाअत और देश व समुदाय की स्थिति मालूम की और यह सब जानकारी हासिल करके उन्होंने हर्ष व्यक्त किया। मंत्री महोदय सबको अपने देश में इस्लाम का प्रतिनिधुत्व करने, बेहतरीन शेहरी बनने और अम्न व शान्ति से रहने का उपदेश दिया।

२ जुलाई २०२३ को अमीर महोदय, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, मौलाना अब्दुस्सलाम सलफी, मौलाना इक़बाल फैज़ी आदि पर सम्मिलित एक प्रतिष्ठित प्रतिनिधि मण्डल के साथ राबता आलमे इस्लामी के केन्द्रीय कार्यालय मक्का मुकर्रमा के महा सचिव डा० मुहम्मद बिन ईसा के निमंत्रण पर पहुंचे जहाँ पर उन्होंने राबता के अन्य पदधारियों के साथ प्रतिनिधिमण्डल का प्रेमपूर्वक स्वागत किया। इस अवसर पर मर्कज़ी जमीअत के अमीर ने सऊदी अरब के सहयोग व दिफा में जमाअत अहले हदीस के प्रयासों और सऊदी ओलमा, शासकों के जमीअत और प्रिय देश के प्राचीन संबन्धों का उल्लेख किया और जमाअत अहले हदीस की विभिन्न सेवाओं का वर्णन किया और अमीर महोदय को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। हज के इस सफर में मर्कज़ी जमीअत के सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सफली ने एक प्रतिष्ठित प्रतिनिधिमण्डल के साथ हरम नबवी के वरिष्ठ इमाम व खतीब डा० अब्दुल मुहसिन अल क़ासिम से मस्जिदे नबवी में ४ जुलाई को अस्र की नमाज़ के बाद मुलाक़ात की।

हज के इस सफर में मर्कज़ी जमीअत के अमीर महोदय ने विभिन्न अवसर पर इस्लामी मामलात मंत्रालय के रेक्टर शैख औवाद अलअंजी, मस्जिदुल हरम और

मस्जिदे नबवी के मामलात के संरक्षक डा० अब्दुर्रहमान अस्सुदैस, सुप्रिम ओलमा परिषद के सदस्य डा० यूसुफ बिन मुहम्मद बिन सईद, राब्ता आलमी इस्लामी के रेक्टर डा० मुहम्मद अलमजदूई के अलावा इस्लाम जगत की महत्वपूर्ण हस्तियों और ओलमा से मुलाकात की और उनसे विचार विनियम हुआ।

मर्कज़ी जमीअत के सम्माननीय अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी के साथ जामिया इस्लामिया मदीना मुनौवरा में शिक्षारत जामिया सलफिया वाराणसी व अन्य जामिआत के फारिग क्षात्रों का सत्र ५ जुलाई को मग़रिब की नमाज के बाद हरम नबवी के सहन में आयोजित हुआ जिस में ऊंची कक्षाओं के फारिग क्षात्र और अंतिम वर्ष के क्षात्रों की अधिकांश तादाद ने प्रतिभाग लिया और दीनी, जमाअती और संगठनात्मक मसाइल पर विचार विनियम किया एवं उपदेश दिया इस अवसर पर अमीर महोदय ने बाज़ क्षात्रों के सवालों का संतुष्ट जनक जवाब दिया।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

(प्रेस रिलीज़)

सफ़र १४४५ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, १७ अगस्त २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ मुहर्रमुल हराम १४४५ हिजरी अर्थात १७ अगस्त २०२३ जुमेरात को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और मुहर्रमुल हराम के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १८ अगस्त २०२३ जुमा के दिन सफ़र की ३०वीं तारीख होगी।

वक़्त बहुमूल्य है

सईदुर्रहमान सनाबिली

वक़्त अल्लाह तआला की तरफ से प्रदत्त एक महान नेमत है जिसके बारे में क़्यामत के दिन हिसाब लिया जाए जाए गा। हिसाब लेने का मतलब यह है कि इन्सान ने अपनी उम्र को कहाँ और किन कामों में खपाया और खर्च किया। वक़्त की अहमियत का अन्दाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि अल्लाह ने कुरआन में विभिन्न सूरतों में वक़्त की क़सम खा करके इन्सान को वक़्त की अहमियत का एहसास दिलाया है और वक़्त के सहीह स्तेमाल के लिये उभारा है। अगर कोई अपने वक़्त का सहीह स्तेमाल करता है तो कामयब है और जो अपने वक़्त को यूं ही बर्बाद करता है वह घाटा उठाने वालों में से है। एक अवसर पर अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''क्यामत के दिन किसी बन्दे के पांव उस वक़्त तक आगे नहीं बढ़ सकेंगे जब तक उससे उसकी आयु के बारे में सवाल न कर लिया जाए कि अपनी आयु को कहां लगाया, ज्ञान के बारे में कि उसने ज्ञान के अनुसार कितना अमल किया। माल के बारे में कि कहाँ से कमाया और कहां खर्च किया और शरीर के बारे में कि उसने अपने शरीर का स्तेमाल कहाँ किया। (सुनन तिर्मिज़ी २९१७, शैख अलबानी ने इस हदीस को सहीह कहा है)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को नसीहत करते हुए फरमायाः

''पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले गनीमत (महत्वपूर्ण और कीमती) समझो। अपनी जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरूस्ती को बीमारी से पहले, मालदारी को मोहताजी से पहले, खाली वक़्त को व्यस्तता से पहले और जिन्दगी को मौत से पहले, (मुस्तदरक हाकिम ७८४६, बैहकी १०२४८, शैख अलबानी रह० ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

वक़्त अल्लाह की दी हुई पूंजी है जिसके बारे में क्यामत के दिन सवाल जवाब होगा। अगर हम ने अपने वक़्त को अल्लाह की इबादत और नेक कामों में लगाया होगा तो हम सफल होंगे और हमने अल्लाह की इस नेमत को व्यर्थ कामों में लगाया होगा तो क्यामत के दिन पछतावे के एलावा कुछ नहीं हाथ आएगा। इसी तरह अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ताकतवर मुसलमान (ताकतवर का अर्थ यह है कि

जिसका ईमान मजबूत हो, अल्लाह पर भरोसा रखता हो) अल्लाह के नजदीक बेहतर और अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द है, कमजोर मुसमलान से पहल करो उन कामों में जो तुम्हारे लिये लाभकारी हैं (अर्थात आखिरत में काम देंगे) और मदद मांग अल्लाह से और हिम्मत मत हार और तुझ पर कोई मुसीबत आए तो इस तरह न कहो कि अगर मैं ऐसा करता तो यह मुसीबत क्यों आती बल्कि इस तरह कहो कि अल्लाह की तरफ से लिखी गई तक़दीर में ऐसा ही था जो उसने चाहा किया। अगर मगर करना शैतान के लिये राह खोलना है। (सहीह मुस्लिम २६६४)

यह हदीस हम को शिक्षा देती है कि हम हर प्रकार के बेकार और फालतू कामों से बचें और कोई ऐसा काम न करें जिससे हमारा वक़्त बर्बाद होता हो, हमारे मान सम्मान को खतरा हो और जिस का कोई फायदा न हो।

जाने अनजाने में हर इन्सान से गलती होती है लेकिन पाप और गलती होने के बाद गलती का एहसास न करना ऐब की बात है। हम लोग सोशल मीडिया पर देखते हैं कि अश्लील वीडियो बनाने वाले खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं और उनको अपने इस पाप का एहसास नहीं होता।

खुल्लम खुल्ला पाप कितना बुरा है इसका अन्दाज़ा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से बयान इस हदीस से लगा सकते है जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जाए गा सिवाए उन लोगों के जो खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं और पाप को खुल्लाम खुल्ला करने में यह भी शामिल है कि एक शख्स रात को कोई पाप करे जबकि अल्लाह ने उसके पाप को छिपाये रखा मगर सुबह होने पर वह पाप करने वाला लोगों से कहने लगे कि मैंने रात में ऐसा ऐसा पाप किया था। रात गुज़र गई थी और उसके रब ने उसका पाप छुपाये रखा लेकिन जब सुबह हुई तो पाप करने वाले ने स्वयं ही अपने पाप को खोल खोल कर बयान कर दिया'' (सहीह बुखारी ६-६, सहीह मुस्लिम २६६०)

इस हदीस से मालूम हुआ कि सोशल मीडिया पर अश्लील वीडियो बना कर वायरल और फैलाने वाले चूंकि खुल्लम खुल्ला पाप करते हैं इस वजह से अल्लाह ऐसे लोगों को हर्गिज मआफ नहीं करेगा।

इन सब कामों में वक़्त की बर्बादी के साथ पाप भी होता है इसलिये सब से हमारी अपील है कि इस तरह के कामों से स्वयं को दूर रखें और कानून के दायरे में रहते हुए अपने समाज से इस घातक रोग के उन्मूलन का प्रयास भी करें क्योंकि कि हमारी नई पीढ़ी नैतिक एतबार से खतरे में पड़ती जा रही है। हम तमाम लोगों पर नैतिक और मानवीय कर्तव्य है कि हम व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर इस अश्लीलता से मानवता को बचाने के लिये व्यवहारिक कदम उठायें।

ज्ञान प्राप्त करने के आठ महत्वपूर्ण सिद्धांत

व्याख्यानः अल्लामा सालेह बिन फौज़ान अलफौज़ान अनुवादः मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

अमल करने से पहले हमारे लिये सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य ज्ञान की प्राप्ति है जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ नबी! आप यकीन कर लें (जान लें) कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और अपने गुनाहों की क्षमायाचना मांगा करें और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के हक में भी, अल्लाह तआला तुम लोगों की आमद व रफ्त की और रहने सहने की जगह को खूब जानता है। (सूरे मुहम्मद :१६)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह तआला ने कथनी व करनी से पहले ज्ञान से शुरूआत की है क्योंकि ज्ञान ही पर कथनी व करनी की बुनियाद रखी जाती है। ज्ञान के बिना अमल गुमराही का सबब बन जाता है। इसी तरह अमल के बगैर ज्ञान भी गुमराही है। इसलिये अल्लाह तआला ने सूरे फातिहा के अन्त में अपने बन्दों को इस दुआ की शिक्षा दी है कि हमें सत्यमार्ग का मार्गदर्श कर, उन लोगों के रास्ते की जिन पर तूने अपनी दया व करूणा को निछावर किया न कि उनके रास्ते की जिन पर तेरा प्रकोप नाजिल हुआ और गुमराह (पथभ्रष्ट) हुए। जिन पर अल्लाह का करूणा हुआ यह वह लोग हैं जो लाभकारी ज्ञान सीखने के साथ सत्कर्म भी करते हैं जबकि अल्लाह के क्रोध के पात्र वह लोग हैं जिन्होंने ज्ञान तो सीखा लेकिन इस पर अमल नहीं किया। एक मुसलमान नमाज की हर रकात में जब सूरे फातिहा पढ़ता है तो अल्लाह से यही मांगता है कि ऐ अल्लाह! तू मुझे उन लोगों के रास्ते पर चला जिन पर तूने अपनी दया करूणा किया अर्थात नेक लोगों के रास्ते पर चलाने की क्षमता दे और उन लोगों के रास्ते पर जाने से बचा ले जिन पर तेरा प्रकोप अवतरित हुआ अर्थात उन्होंने ज्ञान तो हासिल किया लेकिन अपने ज्ञान के अनुसार अमल नहीं किया और उन लोगों के रास्ते से भी सुरक्षित रख जिन पर तेरा क्रोध नाजिल हुआ यानी जिन्होंने ज्ञान तो हासिल किया लेकिन इस अमल की बुनियाद ज्ञान पर नहीं रखी। अल्लाह ने अपने नबी को हिदायत और सत्य दीन के साथ भेजा। हिदायत का अर्थ लाभकारी ज्ञान और सत्य दीन का अर्थ सत्कर्म है। यह दोनों दीन के अटूट भाग हैं।

अल्लाह ने पवित्र कुरआन की सूरे तौबा (अत्यत न.१२२) में अपने बन्दों को ज्ञान की प्राप्ति के लिये निकलने की प्रेरणा दी है और कहा है कि एक जमाअत दीन का ज्ञान हासिल करने के लिये निकले, जहां भी ज्ञान मिल सके वहां का सफर करे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज्ञान की फजीलत बयान करते हुए फरमायाः अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का एरादा करता है उसे दीन की समझ दे देता है। कुरआन और हदीस का ज्ञान हासिल करने वालों को ही अल्लाह ने यह फज़ीलत और श्रेष्ठता देकर अपने ऐसे बन्दों पर बड़ा उपकार किया है।

ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिये

अल्लामा सालेह फौजान अल फौज़ान ने कुछ सिद्धांत और नियम बताये हैं जिन को ध्यान में रखना एक क्षात्र के लिये ज़रूरी है।

१. ज्ञान की प्राप्ति के लिये निरन्तर प्रयास की जरूरत होती है इसके अतिरिक्त सब्र व संयम और वक्त दरकार है जैसा कि एक अरबी कवि ने कहा है :

ज्ञान प्राप्त करो और परेशान न हो, परेशान होना ज्ञान के लिये हानिकारक है क्या तुमने रस्सी नहीं देखी है कि वह बार-बार जब मजबूत चटटान पर रगड़ खाती है तो उस पर निशान डाल देती है। इसलिये मायूसी को फटकने नहीं देना चाहिए अर्थात ज्ञान की प्राप्ति को कठिन नहीं समझना चाहिए। लाभकारी ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिये फरिश्ते दुआ करते हैं और उसकी मेहनत व उपलब्धि से खुश हो कर उसके लिये अपने पर बिछा देते हैं। एक अरबी कवि ने कहा है :

जो शख्स ज्ञान पाने के लिये एक घड़ी भी सहन नहीं करता तो फिर वह जीवन भर अज्ञानता का प्याला पीता रहता है। इसलिये ज़रूरी है कि सब्र व संयम से काम लिया जाए और निरन्तर प्रयास जारी रखा जाए यहां तक कि अल्लाह की क्षमता से मकसद प्राप्त हो जाए।

२. ज्ञान प्राप्त करने का दूसरा नियम यह है कि केवल किताबों से ही ज्ञान न सीखा जाए और न ऐसे लोगों से ज्ञान लिया जाए जो नाम के ज्ञानी हैं और उन्हें दीन की समझ नहीं है इसलिये ज्ञान केवल ज्ञानियों से हासिल किया जाए। ज्ञान हासिल करने का एक सिद्धांत यह भी है कि ज्ञान प्रसिद्ध ओलमा और नेक लोगों से हासिल किया जाए जिन्होंने स्वयं अपने अध्यापकों से ज्ञान सीखा और क्यामत तक यह सिलसिला चलता रहे।

३. ज्ञान सीखने का एक तरीका और नियम यह भी है कि श्रृंखलाबद्ध तरीके से सीखे, ज्ञान की बुनियादी बातों की तरफ ध्यान दे। मतभेद पर आधारित किताबों से परहेज करे।

४. ज्ञान प्राप्त करने का एक सिद्धांत यह भी है कि क्षात्र केवल एक कला सीखने पर संतोष न करे बल्कि हर कला की संक्षिप्त और लाभकारी बातें सीखे क्योंकि सारे ज्ञान एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। क्षात्र के लिये ज़रूरी है कि सबसे पहले वह पवित्र कुरआन पढ़े और याद करे, देख कर तजवीद के साथ तिलावत करे क्योंकि ज्ञान का आधार कुरआन है फिर तफसीर पढ़े ताकि कुरआन का ज्ञान मिले। इसके बाद फिकह और ग्रामर की किताबें पढ़े यह सब कुरआन व हदीस को समझाने के लिये जरूरी है।

५. ज्ञान के हासिल करने का एक सिद्धांत यह भी है कि अल्लाह ने आप को जितना ज्ञान दिया है उसके अनुसार अमल करे इससे ज्ञान में बढ़ोतरी और बरकत होगी। हिकमत और अक़लमन्दी की यह बात बहुत मशहूर है कि जिसने ज्ञान के अनुसार अमल किया उसे अल्लाह वह ज्ञान भी दे देता है जो उसके पास नहीं था। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है :

''अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह तआला तुम्हें शिक्षा दे रहा है और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है'' (सूरे बक़रा-२८२)

इस लिये आप ने जो इल्म सीखा है उस पर अमल भी करें ऐसे ज्ञान में बर्कत नहीं होगी जिस में अमल न किया जाए बलिक वह क्यामत के दिन आप के खिलाफ

दलील बन जाएगी कि इल्म के बावजूद अमल क्यों नहीं किया। ज्ञान बिना अमल के उस पेड़ के समान है जिस में फल ही न आता हो।

जिन लोगों के ज़रिये क्यामत के दिन सबसे पहले जहन्नम को भड़काया जाएगा उनमें वह ज्ञानी (आलिम) भी होगा जिसने ज्ञान के अनुसार अमल न किया होगा।

क्षात्र के लिये ज़रूरी है कि वह सबसे पहले अपने ज्ञान के अनुसार अमल करे फिर इसे दूसरे लोगों को सिखाए और इसका प्रचार करे। अल्लाह के रसूल स० ने फरमायाः

''जब इन्सान मर जाता है तो उसके आमाल का सिलसिला टूट जाता है सिर्फ तीन चीज़ें बाक़ी रह जाती हैं (जिनका सवाब उसे मिलता रहता है) सदक़-ए-जारिया, ऐसा इल्म जिससे भायदा उठाया जाए, नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे।

इन तीनों चीज़ों में सबसे ज़्यादा बेहतर इल्म है जिससे भायदा उठाया जाता है क्योंकि सद-कए जारिया किसी न किसी दिन समाप्त हो जाएगा इसी तरह नेक औलाद किसी दिन दुनिया से रूखसत हो जाएगी लेकिन ज्ञान स्थिर चीज है क्योंकि जब तक उसके शिष्य और किताबों रहेंगी वह मरने के बाद भी सवाब का हक़दार बना रहेगा। इस तरह इल्म में बरकत और भलाई है शर्त यह है कि इस नियम के अनुसार और ज्ञानियों से प्राप्त किया जाए और इसके अनुसार अमल करके इसको साबित और बाकी रखा जाए।

६. छात्र के लिये ज़रूरी है कि वह शरई ज्ञान को निःस्वार्थ एरादे से और अल्लाह की खुशी और सामीप्ता के लिये सीखे, दिखावा न हो। ज्ञान इसलिये न सीखा जाए कि लोग उसे ज्ञानी कहें। क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति एक नेक अमल है और नबी स० ने फरमायाः

आमाल का आधार निय्यत पर है और इन्सान को वही मिलेगा जिसकी उसने निय्यत की होगी इसलिये निःस्वार्थ एरादे से इल्म हासिल करें और अगर इस एरादे से इल्म सीखे गा कि उसकी तारीफ की जाएगी तो वह क़्यामत के दिन इस हाल में लाया जाएगा कि अल्लाह तआला उस से फरमाएगा ज्ञान के अनुसार कितना अमल किया? तो वह कहेगा कि मैंने इल्म सीखा और सिखाया, मैंने तेरे खातिर कुरआन की तिलावत की। अल्लाह तआला फरमाए गा कि तू झूठा है तूने इल्म इसलिये सीखा था कि तुझे आलिम कहा जाए और कुरआन इसलिये पढ़ा था कि क़ारी कहा जाए तो जो तेरा मक़सद था वह तो (दुनिया में) पूरा हो गया। हुक्म होगा फिर इसे घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

७. ज्ञान की प्राप्ति का एक नियम यह भी है कि पहले कुरआन का ज्ञान लेने के बाद अकीद-ए-तौहीद का ज्ञान हासिल करना चाहिए। तौहीद और शिर्क के मसाइल मालूम करें अकीद-ए-तौहीद इस मकसद से सीखना चाहिए कि उसका अकीदा दुरूस्त होने के साथ दूसरों को भी इसकी अहमियत से आगाह करे गा क्योंकि अक़ीदा बुनियादी चीज़ है और इसी पर तमाम कर्मों का आधार है।

८. ज्ञान हासिल करने का एक नियम यह भी है कि इसको परहेजगार ओलमा से सीखा जाए। बाज़ सलफ का कहना है शरई ज्ञान का नाम ही दीन है इसलिये मालूम होना चाहिए कि तुम अपना दीन किस से हासिल कर रहे हो।

❑ ❑ ❑